https://www.printo.it/pediatric-rheumatology/IN_HI/intro

सामायिक बुखार के साथ छाले, गले मे सुजन (ग्रसनीषोथ ग्रंथिप्रदाह) एवं गले की ग्लेण्ड मे सूजन (लसिका ग्रंथी कोप) (पी.एफ.ए.पी.ए.)

के संस्करण 2016

3. दैनिक दिनचर्या

3.1 यह रोग बच्चे और परिवार की दैनिक जीवन को किस तरह प्रभावित कर सकता है?

जीवन की गुणवत्ता बुखार के बार बार आने से प्रभावित हो सकती है। सही निदान के लिये कभी-कभी काफी लम्बा इंतजार करना पड़ सकता है जिससे माता पिता की चिंता बढ़ जाती है और अनावश्यक ईलाज दिया जाता है।

3.2 क्या इससे स्कूल जाना प्रभावित हो सकता है?

नियमित रूप से बुखार आने से स्कूल में उपस्थिति पर प्रभाव पड़ सकता है। दिर्घकालीक बिमारी में भी बच्चे की शिक्षा जारी रहना जरूरी है। ऐसे कारण जिनसे स्कूल की उपस्थिती प्रभावित हो सकती है उनकी जानकारी शिक्षक को देना जरूरी है। पालक एवं शिक्षक की इस बिमारी वाले बच्चों को सभी गतिविधीयों में सामान्य बच्चों जैसे भाग लेने के लिये प्रोत्साहित करना चाहिये। दिर्घकालीक बिमारी होने के बावजूद व्यवसायिक जगत में इन बच्चों को सामान्य लोगों के जैसे हिसमाहित करना जरूरी है।

3.3 क्या यह बच्चे खेल में भाग ले सकते है?

खेल खलना किसी भी बच्चें की दैनिक दिनचर्या का एक अनिवार्य पहलू है। चिकित्सा के उद्देश्य से बच्चों को सामान्य जीवन संभव कराने और अपने साथियों से खुद को अलग ना करने के विचार को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिये।

3.4 आहार कैसा होना चाहिएँ?

कोई विषश आहार की सलाह नही दी जाती है। सामान्यत: बच्चों को उसकी उम्र के मुताबीक संतुलीत आहार दिया जाना चाहिये। पर्याप्त प्रोटीन, कैल्शियम और विटामिन के साथ

स्वस्थ और संतुलीत आहार दिया जाना चाहिये।

3.5 क्या जलवायु रोग के पाठ्यक्रम को प्रभावित कर सकते है?

नही, जलवायु का इस रोग के पाठ्यक्रम पर कोई प्रभाव नही होता है।

3.6 क्या बच्चे को टीका किया जा सकता है?

हाँ, बच्चे को टीका लगाया जा सकता है और लगाना अनिवार्य है। हालांकि इलाज करने वाले चिकित्सक की उचित सलाह के बाद। टीका लगवाने से पहले टीका प्रशासन को सूचित किया जाना आवष्यक होता है।

3.7 यौन जीवन, गर्भावस्था, जन्म नियंत्रण के बारे में क्या?

अब तक,रोगीयों में इस पहलू पर कोई जानकारी नही उपलब्ध हो पाई है। अन्य ऑटोइनफ्लामेट्री बिमारीयों कि तरह इस बिमारी मे भी गर्भावस्था को पूर्व नियोजीत करना ही उचित है। इससे दवाईयों का गर्भस्थ शिशु पर होने वाले असर से बचा जा सकता है।